



आशा दास काथ

1.151

ASHA ARCHIVES

ॐ न

यप्रजायायथुत्रिधनकाडासमलससिद्धथलयाडास्थान
काहातनय॥३॥वेवाचनीयवडयुष्यं पुनियुखाहा॥३॥अ
त्यायवडयुष्यं पुनियुखाहा॥३॥नलसंरायवडयुष्यं पुनियु
खाहा॥३॥अमिर्गांरायवडयुष्यं पुनियुखाहा॥३॥अमाद्यासि
द्वियवडयुष्यं पुनियुखाहा॥३॥थुलिधनकाडादडायाग्यं चसा

रावना

लिसकरंनसिद्धखाय॥मनु॥३॥उद्यागादनचकुनानि
प्रधुताविडकुगातास्यत्रादगधमिनिगुयागिलाकमदिगा
यीयुषधत्रापुतावृद्धस्ननरसाविखत्रयासानन्दसंदाकन
रावीरावविचानिभाविनदिवावाभादिकायागुव॥
थुलिधानाखासिद्धखायमललनिकाथमनूभाकसितनी

निय॥ धूलि धून काठा यै चया प्रयुजा याय स्त्री विदि धै नय
धून नय, सिद्धलै निवक, ऊऊं कानय, खान यय, सो जास
ऊय यय, धाला यय, मन विरय ॥ धूलि धून काठा यय ॥
लिदा गय आदि कु गु लिस, खान नऊ सो २ नय, धून नय, नि
मनु नायाय, धन ह॥ धनया य ॥ पागया धनय, देखानय



न
दठायीं खान धनयाया ॥ ~~निय ॥~~ ॥ मंगु ॥ उँ आहँ दिँ उँ ॥
॥ दधुस ॥ उँ ॥ दूडान ॥ आ ॥ दूडान ॥ दूँ ॥ लिडान ॥ दिँ ॥
॥ ऊडान ॥ दूँ ॥ अँ निस ॥ उँ ॥ धूलि धून काठा, अलम धुल धिन
लै खय गुनू गय, जाकि, निख सा गनय, सिद्धलै निक, ऊऊं कान
य, खान यय, सो जा, सक्रय यय, मन विरय, धनय, यय

यच्छि ययाय दडाया नवलि॥ धन आदि काय लिङ्गा चक ॥
धुलि धूनकाठा मंजुल धि चक स्नान वायः कि ग्व निन विस
जन यागकः थ पुजक मयाया॥ ध नलिः सर्ग क्षेम नख त्वा
हि धा यिं किया डम याः त्रय हसिः कृ सि मिता ख रुदवा
क सकातिनी स्नान चिकि धं २ नयः धू नय निर्म गुनाया

यः धा यिं सा धनयायः॥ ॐ ॥ धन मंजुल धिनः सिद्धि र्मः
निचकः जज कानयः स्ना स्नायः सन्न य स्नायः धना मग विय
नाय जय या यता यं पूजा याय जा किल व धूना यै जा याय
जा कि नै पूजा याय॥ धुलि धूनकाठाः दडाया न स्नान यः
हो नस्य तावनाः धू नय निर्म गुनायायः सना न याग क

१ स्नान उपवासाय

सिद्धलंतिचकः जजमकागयैः जाः सप्त यश्च यः धः
 यमनं विरयः युष्मन्मासयायः नायजययायानाययूजा
 यायः जाकिल त्वधूनायूजायायः जाकिनयूजायायः ॥ ०००
 स्थलधूनकाडाः वाक्ययूजायायः दडायागसर्गलोका
 नासर्धश्चायः सिद्धलंतिरियाधनं लिखितं चरु निचा
 मासनिज्ञाना रुय

१ ज्ञानं नयनं वसं सलां कावेद्यं ज्ञानं चक्र २ कायचक्रं वाक
 चक्रं चिन्तनं चक्रं विष्णु चिन्ता ४ ॥
 विरयं विरयः धूमिजयमाताजकर्मदलसनागताडागयः
 १ धूमिस्तानसिनेगुपूजा विद्धि समाप्ता ॥ २०० ॥
 १ ज्ञायांका कायधूनः गुग्गुलुदने धूनकाडाः दडाज
 लगदयावाकज्ञायायार्थयूजायायादिमम्यालः पूजा
 धूनकाडाः दडापूजायः धूमिधूनकाडाः वाक्ययूजाः सर्धश्चा

यः माहनिद्यायः सिद्धलं गिरयः धूलिधूनकाडाः सिनिर्से
 तसिचकः बाहिद कांलसिचकः लिप्ताचक सक्तय काय
 धूलिधूनकाडाः यश्च यस्तान् पूजायायः विष्णुर्जनयायः कं
 निस्तीर्जनियागकः कृत्तिसिमितायाऽभिर्पथियः रुसियाचः व
 निद्याय धुनि ॥ ॥ ॐ ॥

रथनयंचमलिवायकं थ ॥
 रथथसः स्थाडं थः स्वाजः मन्त्रपात्र
 रहुडानः स्थाडं थः दाः मन्त्रत्रा
 रथडासः अजिथः चलाताः ~~क~~ नैग्या
 रलिडानः अजिथः श्वेडः काय
 रजडासः अयताः कथनाः कयरोरा
 रवाहिः अजिथः श्वेयला रवाज

रसिद्रयसः स्थाडं थः
 रकृत्तिसिमितासः स्थायजिः यन्त्र
 रजादिकसः अयलाथलाः



मयसे वाजोतं



कलमपूजा



ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥

॥ श्रीवज्रसत्त्वावाद्यानिबंज

ननिवाकावंबंक्ष्णक्ष्णमहाक्ष्ण्यनिवाकावमहासूक्ति
लेनहियथिवि ॥

॥ ममवज्रसूत्रोक्तं विनाक्ष्ण्यः

मैवयं ॥ वागावपादकायनं मूदवक्तुमत्यमधुलं ॥ २४ ॥

आकाशजायते देवाय ह्यपानमिगाहुरा ॥ वज्रसत्त्ववजा

पायचक्षुःपुष्पापानमिगा ॥

॥ देवावनविनाह्वंवा

समृद्धिअमिगारु ॥ मक्ष्ण्यद्वयजागं वलाशेअभाघयद

॥ ॥ ललागस्यवेवाचनदहिषावत्समृद्धि ॥ यच्चि

सस्यअमिगारु वामअभाघसिद्धि ॥ ॥ देवावनमद

आगिषुक्तवर्तुमहाकलं ॥ अगयाग्नत्तस्याम वहुवज्ररु

वल्लहं॥ ॥ यथेयमगुर्वज्जावायवकधल्लधवंधुरम॥
 पुष्पाह्वानासमानि॥ सर्वगतगगाह्वं॥ ॥ नामा
 ह्वगगाह्वगगाह्वदिगिगर्हवकुदयः॥ कर्तुं शिष्यवज्या
 क्षि॥ जिह्वाशक्तुलाकव्यं॥ ॥ सतात्मकमश्लीला
 य॥ सर्वदाववदविस्तु॥ ॥ स्वासमपयज्यायकं वाजसम

कुरुदक॥ रुजददिहज्जाकक॥ रुजवाभश्यनाजि॥ मूर्ध
 तातादयगीवा॥ गुक्क॥ अमृककुल्लि॥ ॥ ॥ ज्ववद
 दिहवाह्व॥ वामवाह्व॥ गार्कि॥ वाज॥ नीलदल्लुददिहज्जा॥ वा
 मजान्मसावत॥ ॥ ॥ उल्लीषवक॥ वलिस्व॥ ग्नस्य॥ सुय
 नंमम॥ ॥ जूर्डकुसुम॥ वाज॥ यागाह्वनसंस्तुगाह्वं॥

अथ पञ्चाशदधिकोऽध्यायः ॥ चतुर्दशी स मास इव त्रानानका (६)
मद्यमधुलं ॥ ॥ मासवर्गित्वा वना दद्यन्ति मामि कि
मागवर्गित्वा शुक्ला दद्यन्ति मामि कि ॥ ॥ पृथिवी
ला वनाशाना आ यक्ष दुर्गामकी गजाक्षरुया शुक्ला वायु
गालाप्रकिरिणा ॥ ॥ श्रीवज्रसूत्रावाच ॥ दिव्यवज्र

[illegible]

यंमदिसयं.सहुन्ययसादनममायूहानसम्.दरशीमस्य
वज्जकायकाकिनीवज्जवर्हिनीयंवह्लावृत्तिकानायगा
नायजगतातम४यावनवज्जकाकीन्या.दिनसंकल्लयवन्द
नालोकाकिहियरुतिंन्यागधूयगिर्यानमसदा॥ रा
उस्वरावहुचासर्वधर्मानास्वरावहुधाइहं.हून्यगाल्लानव

जस्य हा वात्मका इदं मण्डिप्यो काले न ह्यन्यथां राव यन् ॥ १ ॥
कात्रामद्यं ह्यन ॥ २ ॥ कान ॥ ३ ॥ दुर्वर्ज ॥ ४ ॥ नूका व नूकना ॥ ५ ॥
क का व हा ह्यि क क वि न ॥ ६ ॥ सर्व सत्व धन न ह गा ह्यु क व वि ह
ज स म्ब न मा स्नानं विहा व य न ॥ ७ ॥ ॥ ग द नू क व ॥ ८ ॥
धन द कि हा ह्यि ज्ञा का व हा ह्ये म ह्यु लं ॥ ९ ॥ वाम ह्यु ज्ञा का

व हा व द म ह्यु लं ॥ १० ॥ उ ह ॥ न म ॥ जी ॥ स्ना हा ॥ ११ ॥ उ वा ॥ ष ट य ह ॥ १२ ॥
ह ॥ १३ ॥ स्ना हा ॥ १४ ॥ उ वं ॥ स र्य ॥ कि ॥ मां ॥ ह जी ॥ हं ॥ हं ॥ ह ॥ १५ ॥ स्ना हा
॥ १६ ॥ **जा कि हा ज पूजा** ॥ १७ ॥ उ वं ॥ ज स त्व स ग हा ॥ द ज व ल म नू क वं ॥ व ज
ध म गाय त व ज क म कू ना र व ॥ १८ ॥ कि ॥ ज ॥ हं ॥ १९ ॥ क म ला स न
सं द वा धि स्ना हा ॥ २० ॥ **मं ॥** ॥ २१ ॥ उ ज ॥ हं ॥ मं ॥ २२ ॥ ला धि स्ना हा ॥ **मं ॥**

ॐ आः हं यूथा धिष्ठान ॥ **पूजा** ॥ ॐ श्री वरुह दहनू क प्रवसत्का
लाय या यजू र्ध्व आ वसनं यो क मनं य गिह्वा हा ॥ ॐ स्वस्त्युह
त्यादि ५ ॥ **सिद्धि** ॥ ॐ वरुह गो धस्वा हा ॥ **धूं** ॥ ॐ वरुह धूय स्वा
हा ॥ **ऊं** ॥ ॐ वरुह यूथ स्वा हा ॥ **स्वां** ॥ ॐ वरुह ने व य स्वा हा ॥ **ने** ॥
ॐ वरुह र्या य स्वा हा ॥ ॐ अ का व मू ख सर्व धर्मानां माय नृत्य व

नृत्वा ॥ ॐ आः हं रुह स्वा हा ॥ ॐ आः हं रुह स्वा हा ॥ ॥
॥ ॥ मन्त्राः ॥ हृदय पूतः रुः हाः जि अं वं स्वा हा ॥ पून
ः पितृ भू न्या गां रा वय ॥ ॐ का व ल य म र्गा ऊ नं ॥ मां का व
ह मा म की रु धु दि रु जा व रु घ ष्ट मू डा हं का व ल ना द स्य रु
धु दि रु जा व रु घ ष्ट ह रु ग या सं पू र्ण आ ग न म हा ना ग न ड

वार्थमदकनयनिनगवकयमवजवाकविबुद्धिकर्यात् ॥ ३ नूय
स्कंधवेवावन। वदनानस्कंधवजवा ॥ सहानस्कंधवजसूर्य ॥
विहानस्कंधयमनूर्यव्वन ॥ सर्वतथागकग्रीहनूकवजिवकूषामा
दवजिह्वागय ॥ विसवजिघ्नानय यिष्ठावजिवकूय। नागवजिय
ह्यगमासूर्यवजिस्त्रागयानिधवजि ॥ पृथिविधुपागनि। आय

धुमात्रिनि। गजधुमाकर्मणि वायूधुमपमनूर्यव्वन। जाका
हाधुमहालि। पूनगाज्जालिकालिपकगिमध्वं कालनयनि
नामनरुगवकं कसुषरुजं ॥ प्रथमरुजास्यावजयलूमडाधनं। दि
गीयास्यां वज्जगर्जनियाहा ॥ रुगियास्यामनूर्यव्वन। वरुम्
ह्वं कसुह्यमावकपीगा ॥ काकाह्यकसु उवूकाह्यह्यमागव्या ॥

नास्मिन् का ॥ सुकनास्मादापीता ॥ यमजगिहृषीता ॥ यमदूतीपी
 कनका ॥ यमदूतीवकस्माता ॥ यममथनियस्मासकसु ॥ **विद्वि** ॥
 कुरुसुनिमंरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥
 नयहंरुहंरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥
 यमदूती ॥ गुरुहंरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥

॥ गुरुहंरुहंरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥

नांजवरुहंरुहं ॥ वज्रकलिकानुपेन ॥ यमदूतीवकस्माता ॥ यममथनियस्मासकसु ॥
 गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥
 गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥
 गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥
 गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥ गुरुहंरुहं ॥

घघघाटय २ सर्वदृष्टान हं रुट् ॥ उं वज्रकीलय २ सर्वयान हं रुट् ॥
उं वज्रकीलय वज्रमूजल वज्रधनज्जहाययति. सर्वविघ्नविनाय
मां कायवाक्चिरु. वज्रकीलय ज्जाकाटय माकाटय हं रुट् ॥ १॥
ॐ किति विघ्नविशवयग ॥ गग ४ स्वदय. वीज नहिममालारि न
कनिहं रुवतंगत्वा. गग ह्जुनादिहां सिद्धि ॥ श्रीचक्रसम्बन्धना

वक्ररुगवगिसमायंत समादलयं ॥ ह्यानचक्रमाकाहादृष्ट. मरि
मूत्वमरिसंयूक्त समक समय. मञ्जुलं प्रवि (हा. न स नही कृत्य ४ मः
नामदीरिश्च पूजादवीरिश्च पूजयत् ॥ १॥ हं हं हं ॥ उं जीव
जसह नूकयादि ॥ १॥ **पुष्या** ॥ उं काका (हा हं रुट् ॥ उं उ नू
का (हा हं रुट् ॥ उं ह्मना (हा हं रुट् ॥ उं हुकना (हा हं रुट् ॥ ४ ॥

ॐ यमजाति य हं रुद्र ॥ ॐ यमदूरी य हं रुद्र ॥ ॐ यमदक्षी य हं रुद्र ॥
ॐ यममथनी य हं रुद्र ॥ ४ ॥ ॐ चण्डिका नाय स्वाहा ॥ ॐ गंधा
र्वी स्वाहा ॥ ॐ कालांकुलाय स्वाहा ॥ ॐ कनकरोचन वाय स्वाहा ॥ ॐ मूद्रा
नाय स्वाहा ॥ ॐ लक्ष्मि नमो ह्यस्तनाय स्वाहा ॥ ॐ धानां धका वाय
स्वाहा ॥ ॐ किलिशना वाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ वज्रगंधि स्वाहा ॥ ॐ व

जघ्नी स्वाहा ॥ ॐ वज्रयुधा स्वाहा ॥ ॐ वज्रनेत्र स्वाहा ॥ ॐ वज्रवाक्त्रा
य स्वाहा ॥ ॥ **स्वामि** ॥ ॐ सर्वरुद्रानां संदाहं जगदर्थप्रदाय
कं विनामहि त्रियं रूपां श्रीसुचरं नमः शुभम् ॥ ॥ **स्वामि** ॥ ॐ न
मो गवत्येवीनवीनव्यवाय हं रुद्र ॥ ॐ नमः महाकल्याणि सति
शाय हं रुद्र ॥ ॐ यदामकटकरोचन वाय हं रुद्र ॥ ॐ दक्षकलाल

गुरियसमवायं हं हं ॥ उं स हं स हं स हं स हं ॥ उं य व हं य
हं हं हं हं हं हं हं हं ॥ उं य व हं य व हं य व हं य व हं
॥ उं न मा धू मा न्ध का ना य व प्त्वा य हं हं ॥ ॥ तत्ता पा प द न
ना रु ग कालि गत न मा दि गत य स हं न नि हि त दा सा नां पु ति द न या
मि प्त हं प्त न य व स न्ध नं वि न (ध) आ व क हं म जि ना रु म जि न हं

कुरु गानि कु हं लानि अ नू मा दि गानि वा (ध) सं म्भ क वि न्त म या मि ऊ
न न लानि रु यं स न हं जा ग ना अ ह्मि स व र श व न वा वि चि रु वा वि न
(ध) आ व क अ रु नै मा र्ग ग थ ह्य नू ह्य दि जा ग ॥ ॥ तत्ता मे नी
क नू न्ध मा दि ग थ क च रु व क वि हा ना वि रा व थ ॥ ॥
शी ह नू क ना ग थ ग ग ह्य रु रु ४ व ह ॥ ॥ ह्य श व हं ह्य दि

॥ ॥ शुभिजाय ४ ॥

॥ **दलील न य** ॥ उं जी ॥ अ व म नं पां क

म नं व गि छ स्वा हा ॥ ग रु यं का न ह वा य् म छु लं ग द्य नि वं का न ह
मि म छु लं ॥ ग रु छु क्क काला क हिल सि य अ णं ज नं ॥ ग रु क्का नि य
नि पू नि गं ॥ उं क्कं आं ॥ उं क्कं वं हूं लो मां पां पां वं कां न जा ग पं वा म् ग यं च
प दि यं मू यं प ह्य ग् ॥

॥ **दलील न य** ॥ उं क्कं वं हूं लो मां पां पां वं कां न जा ग पं वा म् ग यं च

ग ण य २ क्का रु य २ जी २ हूं २ द द २ य व २ रु क्क २ व सा न धि वि ना क मा
ला व नं वि न ग् २ स क्क या मा न ग ग रु जं ग ह र्थ वा ग क्क य २ आ का ट
य २ जी २ लो २ आं २ लो २ हूं २ किलि २ हिलि २ धि नि २ हूं २ रु द् ॥

॥ ह्व ह्व ह्व दि २ गि ४ २ व न्च २ स र्व य क्क वा क्क स र्ग य क पि ण वा
प सा न जा क जा किं न्या द य ४ ०० द न्च लि ग् क रु स म य व क रु

मम सर्वस्वानां च सदा यं रुद्रं वज्रधनञ्छापविद्ययउं ज्ञाष्ट
रुद्रश्चाहा ॥ रायं च प्रहानपूजा ॥ अधर्मा ॥ अकानसुरकि
प्रवला ॥ हागाद्वन ॥ ॐ निसमाधिविधिः ॥ ॐ ॥

भावि भावविचारय मय स्युता न न वडे आहुं फृत
स्वाहा श्रीमत्यमंदत्यकांतिप्रसद